* अनुक्रमणिका *

प्रथम अध्याय :

1. धर्मवीर भारती व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

प्रास्ताविक

1.1 जीवन परिचय

1:1:1 जन्मतिथी एवं जन्मस्थान ।

1:1:2 माता–पिता तथा कुल परम्परा ।

1:1:3 शिक्षा ।

1:1:4 परिवार ।

1:1:5 व्यक्तित्व : स्वभाव, अभिरुचि तथा जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण ।

1:1:6 नौकरियाँ/जीविकापार्जन ।

1:1:7 देश–विदेश यात्राएँ ।

1:1:8 सन्मान एवं प्रतिष्ठा ।

1:2 कृतित्व

1:2:1 कविताएँ ।

1:2:2 उपन्यास ।

1:2:3 कहानियाँ ।

1:2:4 नाटक ।

1:2:5 एकांकी ।

1:2:6 निबन्ध/स्फुट ललित गद्य ।

1:2:7 रीपोर्ताज ।

1:2:8 अनुदित कृतियाँ ।

1:2:9 शोधकृतियाँ ।

1:2:10 आलोचना ।

1:2:11 पत्रकारिता ।

1:2:12 निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय :

2. धर्मवीर भारती के उपन्यासों के पात्र ।

2:1 उपन्यास में चरित्र का निर्माण ।

2:2 उपन्यास में चरित्र–चित्रण महत्व ।

2:3 'गुनाहों का देवता' में प्रमुख पात्र ।

2:3:1 चन्दर

2:3:2 सुधा

2:3:3 प्रमिला डिक्रुज

2:4 गौण पात्र

2:4:1 बिनती

2:4:2 बर्टी

2:4:3 गेसू

2:4:4 डॉ. शुक्ला

2:4:5 कवि बिसरिया

2:4:6 कैलाश मिश्र

2:5 "सुरज का सातवाँ घोडा" में प्रमुख पात्र ।

2:5:1 माणिक मुल्ला

2:5:2 तन्ना

2:5:3 जमुना

2:5:4 लिली

2:5:5 सत्ती

2:6 गौण पात्र

2:6:1 महेसर दलाल

2:6:2 चमन ठाकूर

2:6:3 रामधन

2:7 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :

3. धर्मवीर भारती के उपन्यासों के संवाद एवं भाषाशैली ।

3:1 उपन्यास में संवाद का महत्व ।

3:2 संवाद के गुण ।

3:2:1 उपयुक्तता ।

3:2:2 अनुकूलता

3:2:3 स्वाभाविकता ।

3:2:4 सम्बधदता ।

3:2:5 संक्षिप्तता ।

3:2:6 उद्देश्यपूर्णणा ।

3:2:7 भावात्मकता ।

3:2:8 मनोवैज्ञानिकता ।

3:3 कथोपकथन के कार्य

कथावस्तु का विस्तार ।

पात्रों की व्याख्या करना ।

समस्याओं का उद्घाटन करना ।

जीवन के सौन्दर्य को प्रकट करना ।

3:4 धर्मवीर भारती के उपन्यासों के संवाद ।

"गुनाहों का देवता"

"सूरज का सातवाँ घोडा"

3:5 कथोपकथन की सफलता ।

3:6:1 उपन्यास में भाषाशैली

3:6:2 भारती के उपन्यासों की भाषाशैली

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय :

4. धर्मवीर भारती के उपन्यासों का उद्देश्य ।

4:1 हिन्दी उपन्यासों में उद्देश का स्वरुप ।

4:2 धर्मवीर भारती के उपन्यासों का उद्देश्य

4:2:1 नर–नारी के नैतिक अनैतिक सम्बन्ध स्प्ष्ट करना ।

4:2:1:1 नैतिक सम्बन्ध

अ. दाम्पत्य सम्बन्ध

ब. प्रेम सम्बन्ध

4:2:1:2 अनैतिक सम्बन्ध

अ. दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध

4:2:2 निम्न मध्यवर्गीय समाज का यथार्थरुप दिखाना ।

4:2:3 नारी शिक्षा का उद्धार करना ।

4:2:4 रुढी–परम्पराओं पर व्यंग्य करना ।

4:2:5 युवा–युवतियोके के रोमानी पीड़ा का बोध देना ।

4:2:6 समाज की समस्याओं से परिचित कराना ।

4:2:7 अंधश्रध्दा का निमूर्लन करना ।

4:2:8 कर्तव्य के प्रति जागरुक रहना ।

4:2:9 श्रम का महत्व प्रस्थापित करना

4:2:10 स्वान्तःसुखाय ।

4:2:11 संदेश ।

4:2:12 निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय :

5. धर्मवीर भारती के उपन्यासोंमे स्वप्न मनोविज्ञान ।

5:1 स्वप्न का महत्व

5:2 स्वप्न का स्वरुप

5:2:1 फैन्टेसी

5:2:2 सम्मोहन

5:2:3 निद्राभ्रमण

5:2:4 दिवा–स्वप्न

5:3 स्वप्न के सम्बन्ध में विद्वानों की दृष्टि ।

5:4 आधुनिक हिन्दी उपन्यासो में स्वप्न-मनोविज्ञान ।

5:5 उपन्यास साहित्य स्वप्नों की देन

5:6 धर्मवीर भारती के उपन्यासों में स्वप्न–मनोविज्ञान

5:6:1 'गुनाहों का देवता'

5:6:2 'सूरज का सातवाँ घोडा'

5:6:3 निष्कर्ष

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची